फ़ुलस्केप का आधा पन्ना

फ़र्नीचर–गाड़ी जा चुकी थी. किराएदार, जिसके हैट के चारों ओर क्रेप की एक पट्टी लगी हुई थी, सारे कमरों को एक आख़िरी बार देख रहा था कि कहीं कुछ छूट तो नहीं गया. नहीं, कुछ नहीं था, कुछ भी तो नहीं छूटा था. प्रवेश-गृह में पहुंच कर उसने तय किया कि जो कुछ भी इन कमरों में हुआ, वह उसके बारे में अब कभी नहीं सोचेगा. और फिर अचानक उसकी नज़र एक फ़ुलस्केप के आधे पन्ने पर पड़ी जो दीवार और टेलिफ़ोन के बीच में फंसा हुआ था, उस पन्ने पर कुछ लिखावटें थीं, जो एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा लिखी गई थीं. कुछ टिप्पणियां साफ़ थीं और लाल पेन में लिखी गई थीं और कुछ पैंसिल से घसीटी हुई सी लग रही थीं. कहीं कहीं एक लाल पैंसिल का भी प्रयोग किया गया था. जो कुछ उसके जीवन में इन दो वर्षों में घटा, ये सब उसका लेखा-जोखा था. जो कुछ उसने भूलने का फ़ैसला कर लिया था, वो सब लिखा हुआ था. उस आधे पन्ने पर मानव-जीवन का एक टुकड़ा उस आधे पन्ने पर था.

उसने पन्ने को निका लिया; घसीट कर लिखा गया यह पीला

पन्ना सूरज की तरह चमक रहा था. बैठक में आकर उसने आधे पन्ने को आले में रख दिया और उसपर फिर एक नज़र डाली. सबसे ऊपर उसमें एक महिला का नाम लिखा था, 'एलिस' - दुनिया का सबसे ख़ूबसूरत नाम, एलिस उसकी मंगेतर थी. उसके नाम के आगे एक नम्बर था, 15.11. वह भजन-संग्रह के किसी भजन का नम्बर लग रहा था और उस नम्बर के नीचे लिखा था, 'बैंक' - जहां वह काम करता था, पवित्र काम, जिससे उसकी रोज़ी-रोटी और घर चलता था और उसकी पत्नी भी, जो उसके जीवन की नींव थी. एक पेन की लकीर ने उन सारे शब्दों को काट डाला था क्योंकि बैंक फ़ेल हो गया था. हालांकि कुछ अर्से बाद उसे एक और नौकरी मिल गई थी किंतु इस बीच चिंता और असहजता तो रही ही थी.

आगे लिखा था 'फूलों की दुकान' और 'घुड़साल' - ये उसकी सगाई के समय की थीं जब उसकी जेबें पैसों से भरी होती थीं.

उसके बाद लिखा था - 'फ़र्नीचर व्यवसाई' और 'कागज़ लटकाने वाला' - वे अपने घर जा रहे थे. 'अग्रेषण कारिंदे' - उनके घर में सामान पहुंचा रहे थे. 'औपरा-हाउस का बौक्स औफ़िस नम्बर 50,50' - वे नवविवाहित थे और हर रविवार

की शाम को औपरा-हाउस जाते थे; उनके जीवन के सबसे आनन्ददायक घंटे वहीं गुज़रे थे क्योंकि वहां अविचल बैठना होता था, जब उनकी आत्माएं पर्दे के पीछे सौन्दर्य और तालमेल एक परियों की के परि-देश में मिलती थीं.

उसके बाद एक पुरुष का नाम लिखा था, जिसे काट दिया गया था. वह उसकी जवानी के दिनों का एक मित्र था, जो समाज में बहुत ऊंचा उठ गया था किंतु अपनी ही सफलता से बिगड़ कर ऐसा गिरा कि दोबारा न उठा सका और उसे देश छोड़कर जाना पड़ा.

भाग्य इतना अस्थाई था.

अब, उसकी और उसकी पत्नी की ज़िन्दगी में कुछ नया हुआ. अगली एंट्री एक महिला के हाथ की थी 'नर्स?' कौन नर्स? हां, वही औरत, जो एक बड़े सा क्लौक पहने रहती थी और नाज़ुक क़दमों से सीधे उसके शयन-कक्ष में पहुंच जाया करती थी.

उसके नाम के नीचे ही लिखा था, 'डौक्टर एल.'

और अब, पहली बार, एक सम्बन्धी का नाम नज़र आया, 'मामा' जो उसकी सास थी, जिसने विवेकशीलता से सब छिपाए रखा ताकि उसकी नई नई ख़ुशी में व्यवधान न पड़े.

किंतु वह ख़ुश था कि वह इस समय आई जब उसे उसकी ज़रूरत थी.

फिर बहुत सी टिप्पणियां लाल और नीली स्याही में थीं, 'नौकर' 'विवाह का कार्यालय' - नौकरानी चली गई थी और एक नई की ज़रूरत थी. 'औषिधि विक्रेता,' ओह, जीवन अन्धेरा होता चला जा रहा था. 'दुग्धशाला', 'निष्कीटित-दूध' और्डर किया जा रहा था.

'कसाई, 'पंसारी' इत्यादि.' घर के सारे काम अब फ़ोन के ज़रिए हो रहे थे. दलीलें दी जा रही थीं कि घरवाली घर में नहीं थी. नहीं, वह घर पर नहीं थी, वह तो किसी और के साथ सोती रही थी.

उसके बाद जो लिखा था वह पढ़ नहीं पाया क्योंकि उसकी आंखों के आगे अन्धेरा छा गया था. वह एक डूबता हुआ इंसान था, जो खारे पानी के उस पार नहीं देख पा रहा था. फिर भी, वहां साफ़ लिखा था, 'मृत-संस्कार का प्रबन्ध-कर्ता' - बड़ी और छोटी शवपेटियां, और कोष्ठक में एक शब्द 'धूल' जोड़ा गया था.

उस पूरे लेख का यह आख़िरी शब्द था जो 'धूल' में ख़त्म हुआ था. और जीवन में भी तो बिल्कुल ऐसा ही होता है.

उस पीले पन्ने को उठाकर उसने चूमा, फिर सावधानी से तय करके अपनी जेब में रख लिया.

दो मिनटों में वह अपनी ज़िन्दगी के दो साल एक बार फिर जी चुका था.

परंतु घर छोड़ते समय वह झुका नहीं बल्कि अपने सिर को ऊंचा करके निकला, एक प्रसन्न और स्वाभिमानी व्यक्ति की तरह क्योंकि वह जानता था कि जीवन की बेहतरीन चीज़ें उसे मिली थीं. उसे उन लोगों से हमदर्दी हुई जिन्हें ये सब नहीं नसीब नहीं हुआ था.